Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 9

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-1

अध्याय-5 : आधुनिक विश्व में चरवाहे

भाग-3

अफ़्रीका में चरवाहा जीवन

निर्मल सिंह



Under CSR Support by ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. घुमंतू चरवाहे और उनकी आवाजाही
2. औपनिवेशिक शासन और चरवाहों का जीवन
3. अफ़्रीका में चरवाहा जीवन



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अफ़्रीका में चरवाहा जीवन



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

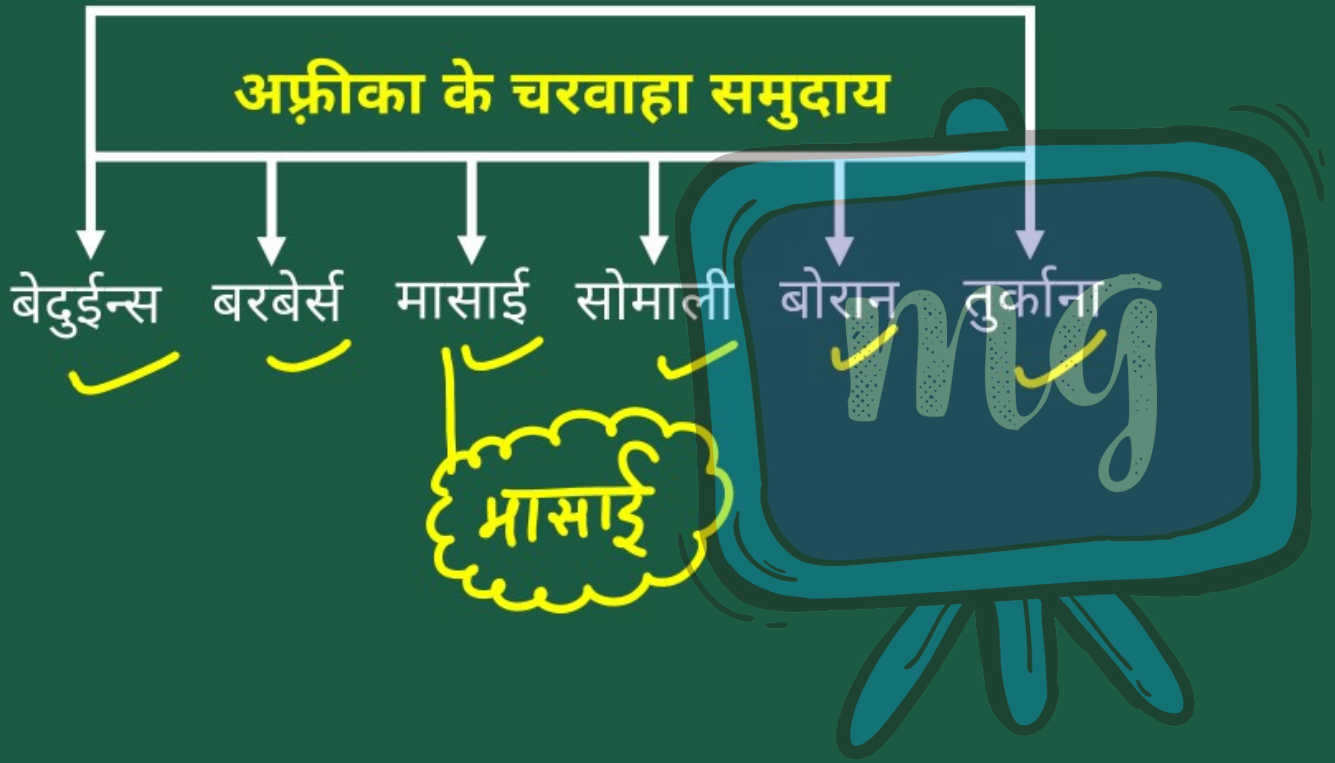
अफ़्रीका में चरवाहा जीवन

- अफ़्रीका में दुनिया की आधी से ज़्यादा चरवाहा आबादी रहती है।
- लगभग सवा दो कराड़ लोग चरवाही गतिविधियों पर आश्रित है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

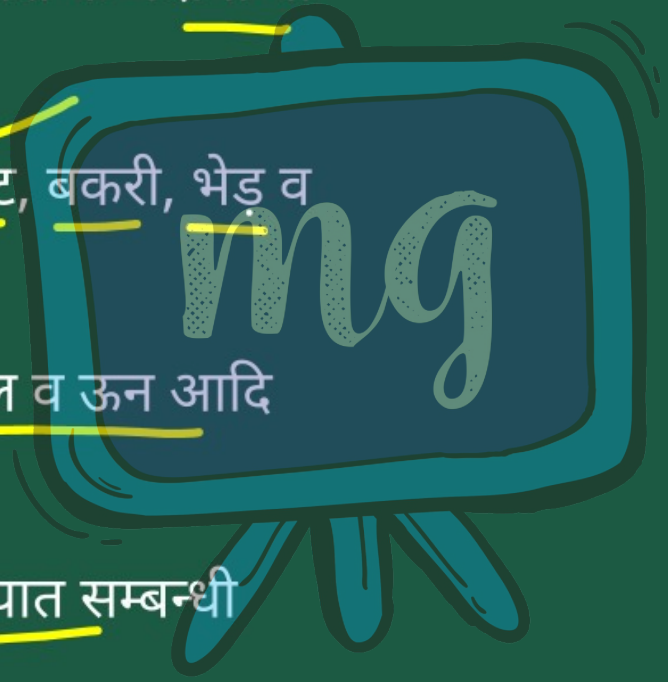
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

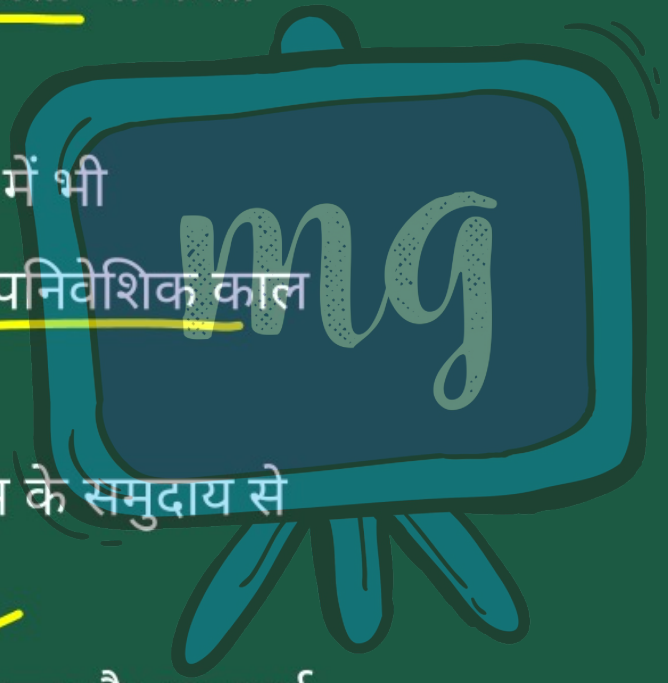
- इनमें ज़्यादातर अर्ध–शुष्क घास के मैदानों या सूखे रेगिस्तानों में रहते हैं।
- यहाँ के चरवाहे गाय-बैल, ऊँट, बकरी, भेड़ व गधे पालते हैं।
- वे दूध, माँस, पशुओं की खाल व ऊन आदि बेचते हैं।
- कुछ चरवाहे व्यापार व यातायात सम्बन्धी काम भी करते हैं।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ चरवाही के साथ-साथ खेती भी करते हैं।
- अफ़्रीकी चरवाहों की ज़िंदगी में भी औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक काल में गहरे बदलाव आए।
- इन परिवर्तनों को मासाई नाम के समुदाय से समझने की कोशिश करेंगे।
- मासाई नाम 'मा' शब्द से निकला है। मा-साई का मतलब होता है 'मेरे लोग'।



Under CSR Support by ipca | Foundation

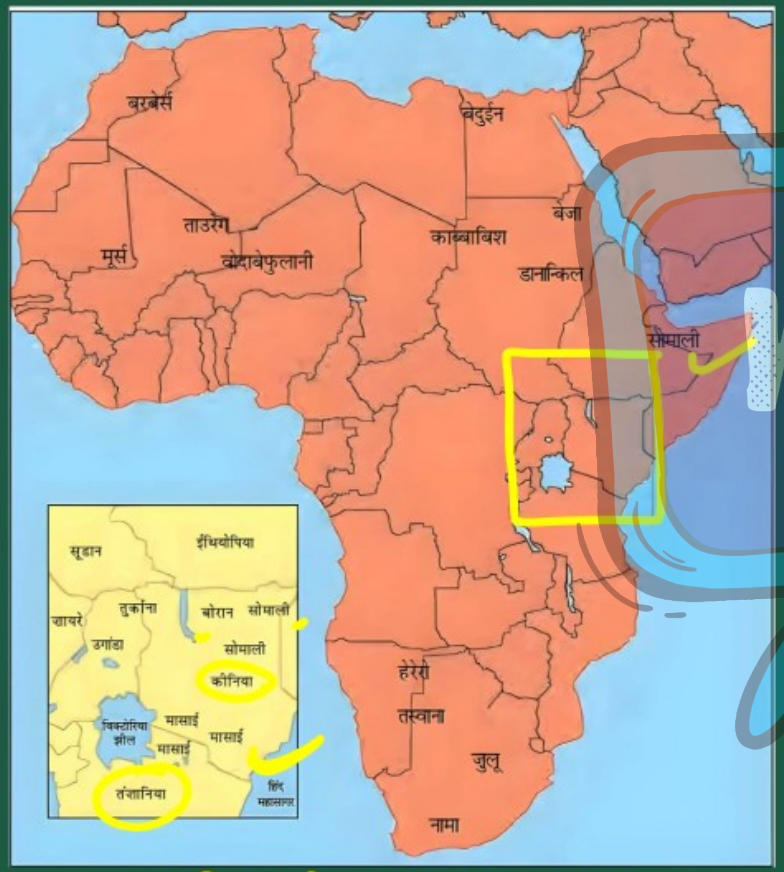
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



मासाई लैंड जिसके पीछे किलिमंजारो पहाड़ दिखाई दे रहे हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

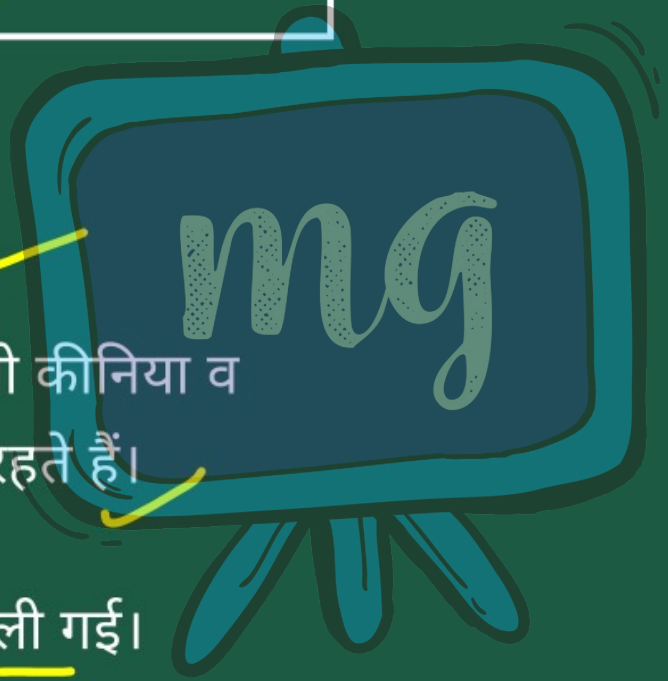


अफ़्रीका के चरवाहा समुदाय

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

मासाई समुदाय

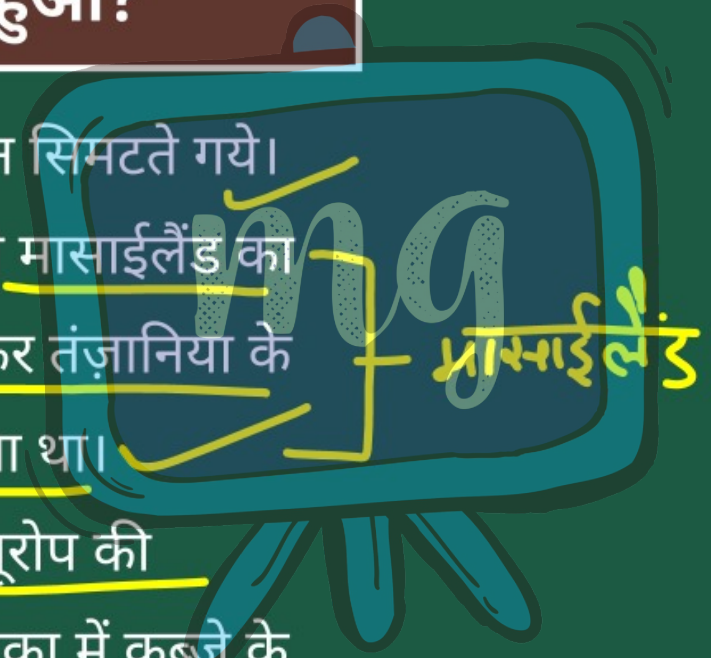


- पूर्वी अफ़्रीका के निवासी
- लगभग 3,00000 दक्षिणी कीनिया व 1,50,000 तंज़ानिया में रहते हैं।
- उनकी ज़मीन उनसे छीन ली गई।
- आवाज़ाही पर पाबंदियाँ थोप दी गई।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

चरागाहों का क्या हुआ?



- मासाइयों के चरागाह दिनोंदिन सिमटते गये।
- औपनिवेशिक शासन से पहले मासाईलैंड का इलाका उत्तरी कीनिया से लेकर तंज़ानिया के घास के मैदानों तक फैला हुआ था।
- उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोप की साम्राज्यवादी ताकतों ने अफ़्रीका में कब्ज़े के लिए मारकाट शुरू कर दी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- बहुत सारे इलाकों को छोटे-छोटे उपनिवेशों में तब्दील करके अपने-अपने कब्ज़े में ले लिया गया।
- 1885 ई. में ब्रिटिश कीनिया और जर्मन तांगान्यिका के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा खींची गई।
- मासाईलैंड के दो बराबर-बराबर टुकड़े कर दिए गए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

तांगान्यिका के बारे में

ब्रिटेन ने पहले विश्वयुद्ध के दौरान उस इलाके पर कब्ज़ा कर लिया जिसे जर्मन ईस्ट अफ़्रीका कहा जाता था।

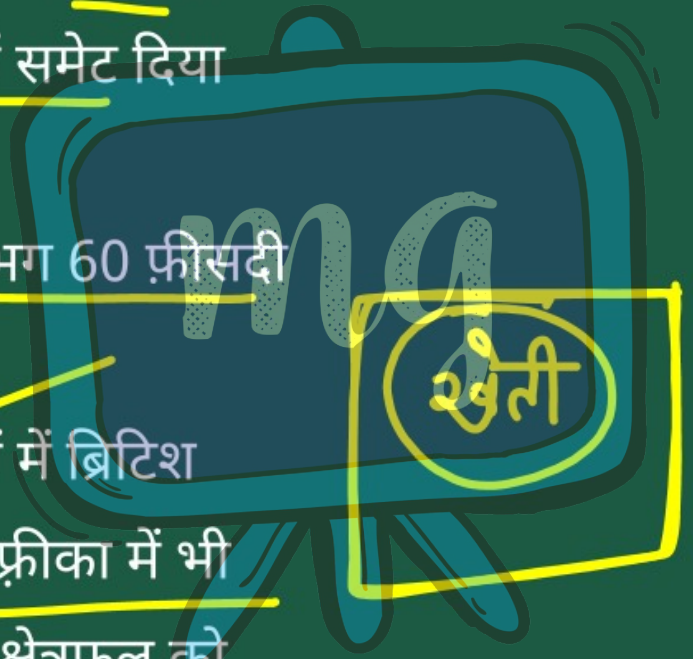
1919 में तांगान्यिका ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया।

1961 में उसे आज़ादी मिली और 1964 में ज़ंज़ीबार के विलय के बाद उसे तंज़ानिया का नया नाम दिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- मासाइयों को दक्षिणी कीनिया और उत्तरी तंज़ानिया के छोटे से इलाके में समेट दिया गया।
- मासाइयों की ज़मीन का लगभग 60 फ़ीसदी हिस्सा उनसे छीन लिया गया।
- उन्नीसवीं सदी के अंतिम सालों में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार पूर्वी अफ़्रीका में भी स्थानीय किसानों को खेती के क्षेत्रफल को फैलाने के लिए प्रोत्साहित करने लगी।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- खेती के प्रसार के साथ चरागाह खेतों में तब्दील होने लगे।
- बहुत सारे चरागाहों को शिकारगाह बना दिया गया।
- कीनिया में मासाई मारा व साम्बूरू नेशनल पार्क अस्तित्व में आए।
- तंज़ानिया में सेरेन्गेटी पार्क जैसे शिकारगाह अस्तित्व में आए।
- इन इलाकों में चरवाहों का आना मना था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सूखे और भोजन की सर्वाधिक कमी से ग्रस्त इलाका अम्बोसेली नैशनल पार्क के आसपास पड़ता है। किलिमंजारो जल परियोजना भी इसी इलाके से होकर जाती है लेकिन यहाँ रहने वाले समुदाय न तो पीने के लिए और न ही सिंचाई के लिए इस परियोजना के पानी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

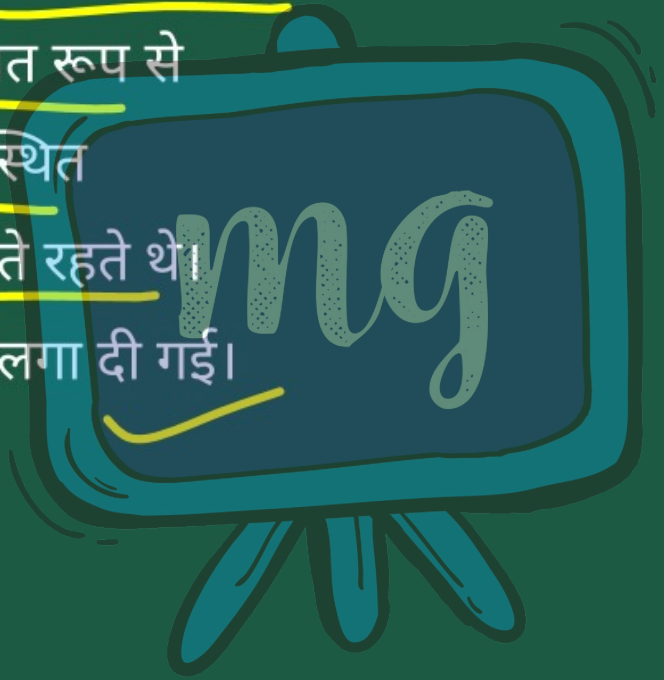


परंपरागत रूप से मासाई घुमंतू और चरवाहा समुदाय के लोग होते हैं जो अपनी आजीविका के लिए दूध और माँस पर आश्रित रहते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

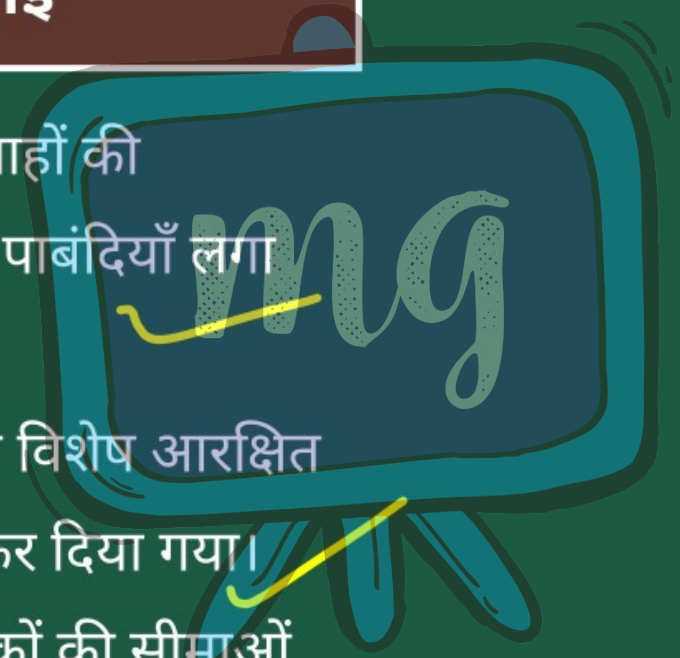
- दक्षिणी-पश्चिमी अफ़्रीका में स्थित नामीबिया के काओकोलैंड चरवाहे परम्परागत रूप से काओकोलैंड और पास ही में स्थित ओवाम्बोलैंड के बीच आते-जाते रहते थे।
- इन्हें भी आने-जाने पर पाबंदी लगा दी गई।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सरहदें बंद हो गई



- औपनिवेशिक सरकार ने चरवाहों की आवाजाही पर तरह-तरह की पाबंदियाँ लगा दी।
- मासाइयों व अन्य चरवाहों को विशेष आरक्षित इलाकों की सीमाओं में कैद कर दिया गया।
- ये समुदाय इन आरक्षित इलाकों की सीमाओं के पार आ-जा नहीं सकते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

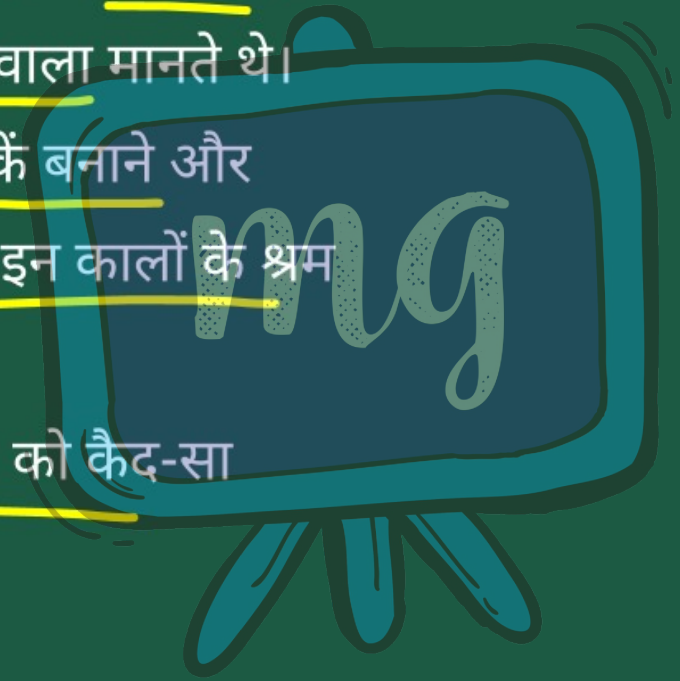
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- वे विशेष परमिट लिए बिना अपने जानवरों को लेकर बाहर नहीं जा सकते थे।
- परमिट हासिल करने के लिए उन्हें तरह-तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता था।
- नियमों का पालन नहीं करने पर कड़ी सजा दी जाती थी।
- चरवाहों को गोरों के इलाके में पड़ने वाले बाजारों में दाखिल होने से भी रोका गया।
- उन पर व्यापारिक पाबंदी भी लगी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- गोरे और यूरोपीय औपनिवेशिक अफ़सर उन्हें खतरनाक और बर्बर स्वभाव वाला मानते थे।
- खानों से माल निकालने, सड़कें बनाने और शहर बसाने के लिए गोरों को इन कालों के श्रम पर ही भरोसा था।
- चरवाहे छोटे से इलाके में खुद को कैद-सा महसूस करने लगे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

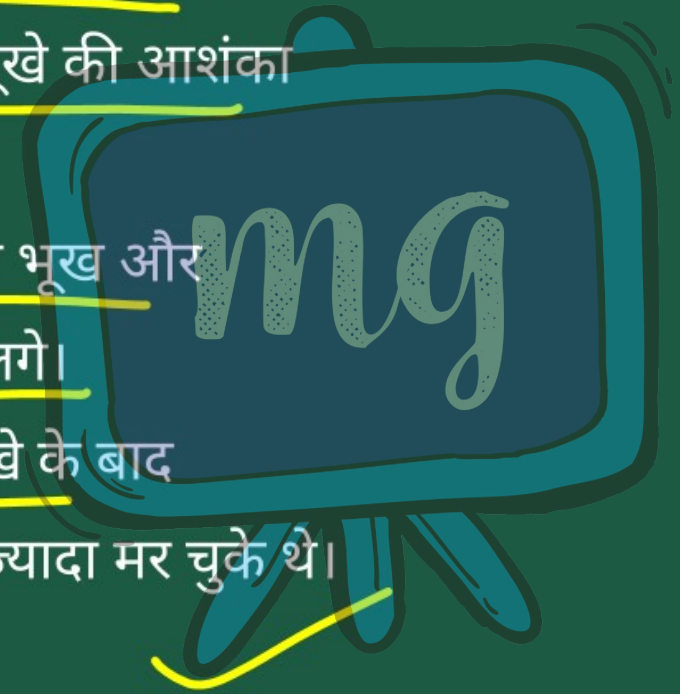
जब चरागाह सूख जाते हैं

- बारिश न होने पर चरागाह सूख जाते हैं।
- मवेशियों के सामने भुखमरी का संकट पैदा हो जाता है।
- मवेशियों को ऐसी स्थिति में किसी हरे-भरे इलाके में ले जाना पड़ता है।
- लेकिन मासाइयों को एक निश्चित इलाके में कैद कर दिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

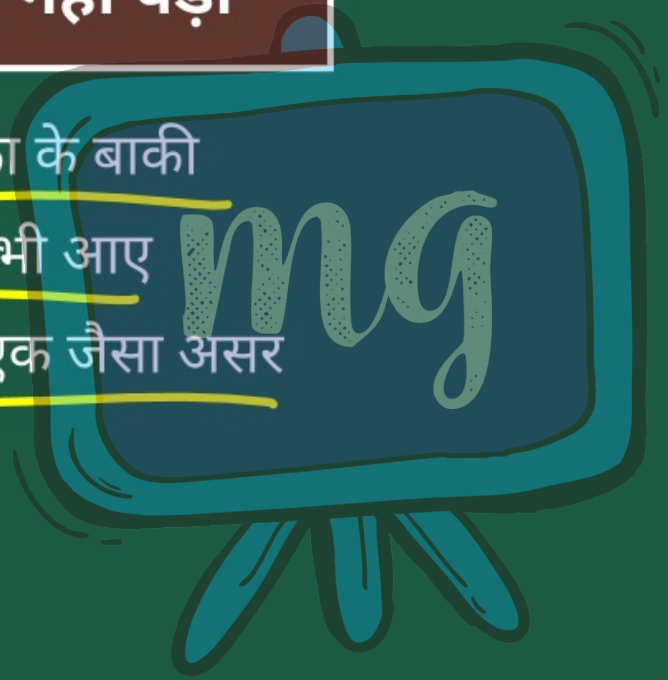
- उन्हें एक ऐसी अर्ध-शुष्क पट्टी में रहने पर मजबूर कर दिया गया जहाँ सूखे की आशंका हमेशा बनी रहती थी।
- मासाइयों के बहुत सारे मवेशी भूख और बीमारियों की वजह से मरने लगे।
- 1933 और 1934 में पड़े सूखे के बाद मासाइयों के मवेशी आधे से ज़्यादा मर चुके थे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सब पर एक जैसा असर नहीं पड़ा



- औपनिवेशिक काल में अफ़्रीका के बाकी स्थानों की तरह मासाइलैंड में भी आए बदलावों से सारे चरवाहों पर एक जैसा असर नहीं पड़ा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उपनिवेश बनने से पूर्व मासाई समाज दो सामाजिक श्रेणियों में बँटा हुआ था।

वरिष्ठ जन (ऐल्डर्स)

- शासन चलाते थे
- समुदाय से जुड़े मामलों पर विचार-विमर्श
- अहम फ़ैसले लेने के लिए सभा करना

योद्धा (वॉरियर्स)

- लड़ाई लड़ना
- कबीले की हिफ़ाज़त करना
- समुदाय की रक्षा करना
- दूसरे कबीलों से मवेशी छीनना।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



योद्धा (वॉरियर्स)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- अंग्रेज सरकार ने कई मासाई उपसमूहों के मुखिया तय कर दिये।
- अपने-अपने कबीले के सारे मामले की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंप दी।
- हमलों और लड़ाइयों पर पाबंदी लगा दी।
- वरिष्ठ जनों ओर युद्धाओं, दोनों की परम्परागत सत्ता कमजोर हो गई।
- समय बीतने के साथ औपनिवेशिक सरकार द्वारा नियुक्त किए गए मुखिया माल इकट्ठा करने लगे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

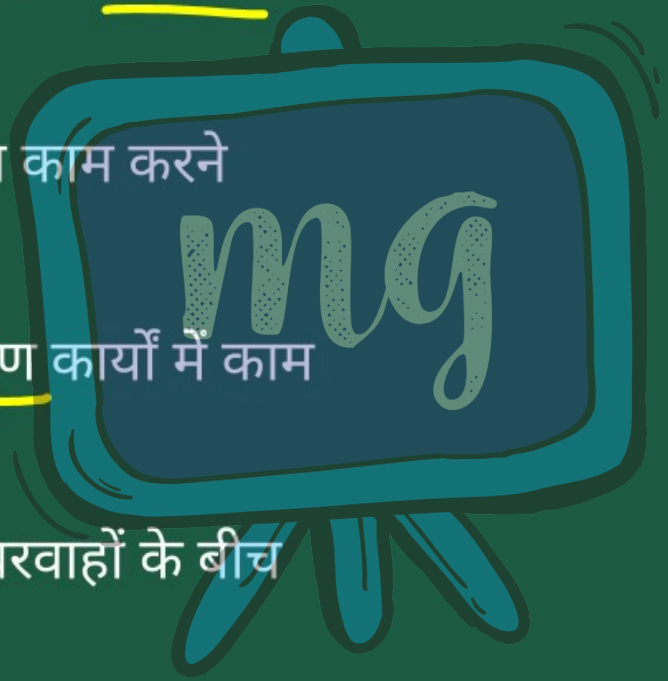
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- उनके पास नियमित आमदनी थी।
- वे जानवर, साज़ो-सामान और ज़मीन खरीद सकते थे।
- जो चरवाहे सिर्फ़ अपने जानवरों के सहारे ज़िंदगी बसर करते थे उनके पास बुरे वक्त का सामना करने के लिए अक्सर साधन नहीं होते थे।
- युद्ध और अकाल के दौरान उनका सब कुछ खत्म हो जाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

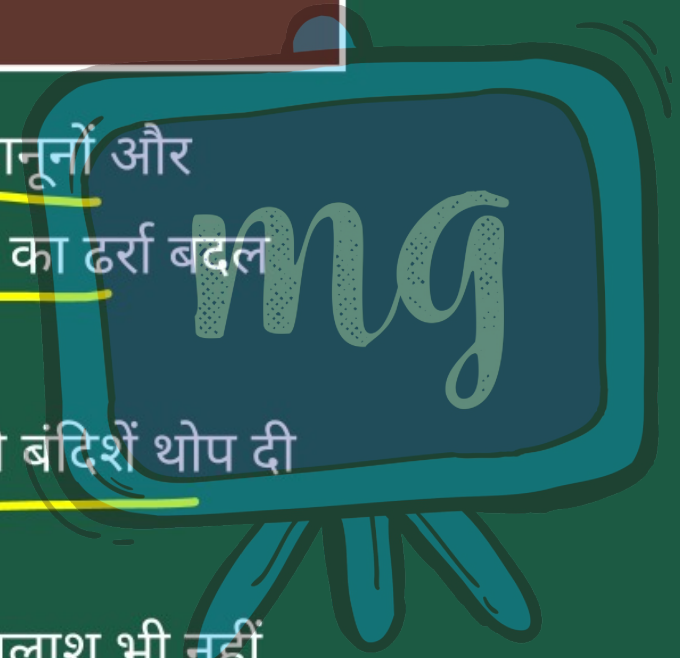
- उन्हें काम की तलाश में आसपास के शहरों में शरण लेनी पड़ती थी।
- कुछ कच्चा कोयला जलाने का काम करने लगते।
- कुछ को सड़क या भवन निर्माण कार्यों में काम मिल जाता था।
- इस प्रकार अमीर और गरीब चरवाहों के बीच नया भेदभाव पैदा हुआ।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

निष्कर्ष



- औपनिवेशिक काल के नए कानूनों और सीमाओं ने उनकी आवाजाही का ढर्रा बदल दिया।
- अब आने-जाने पर बहुत सारी बंदिशें थोप दी गईं थी।
- इसलिए वे नए चरागाहों की तलाश भी नहीं कर सकते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- अब वे अपनी आवाजाही का रास्ता बदल लेते हैं।
- जानवरों की संख्या कम कर लेते हैं।
- नए इलाकों में दाखिल होने के लिए हर सम्भव लेन-देन करते हैं।
- वे राहत, रियासत व मदद के लिए सरकार पर राजनीतिक दबाव डालते हैं।
- पर्यावरणवादी और अर्थशास्त्री अब मानने लगे हैं कि घुमंतू चरवाहों की जीवनशैली दुनिया के बहुत सारे पहाड़ी और सूखे इलाकों में जीवनयापन के लिए सबसे ज़्यादा उपयुक्त है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जयपुर राजमार्ग पर राइका गड़रिये

बड़ी सड़कों पर भारी यातायात ने गड़रियों के नए इलाके में जाने की प्रक्रिया को एक नया अनुभव बना दिया है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

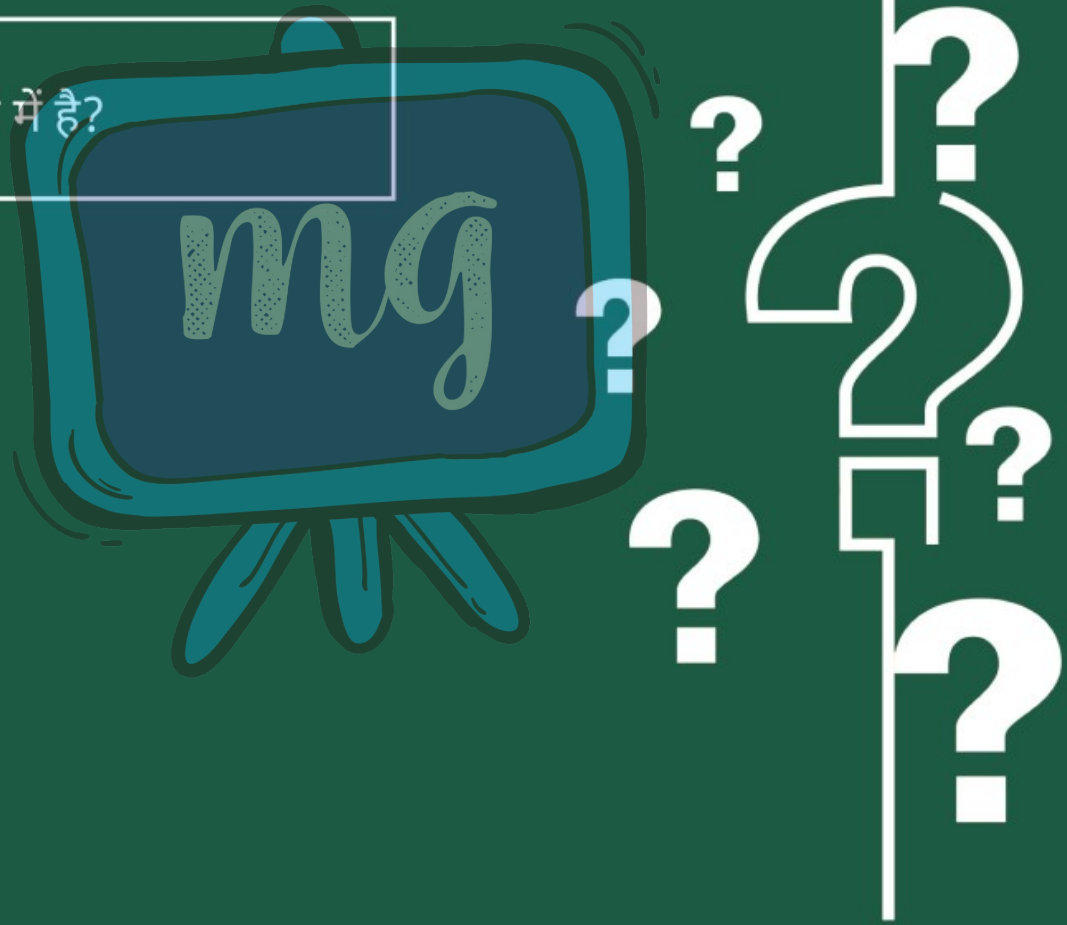
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. अफ़्रीका के चरवाहा समुदाय
2. मासाई समाज



1 | सरेन्गेटी नेशनल पार्क किस देश में है?

- अ अमेरिका
- ब अफ़्रीका ✓
- स ईरान
- द भारत



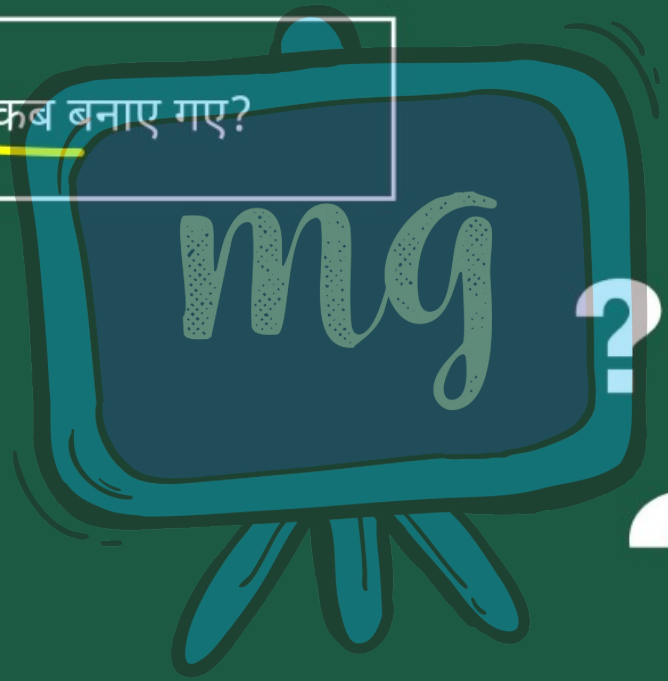
2 मासाईलैंड के दो बराबर हिस्से कब बनाए गए?

अ 1875

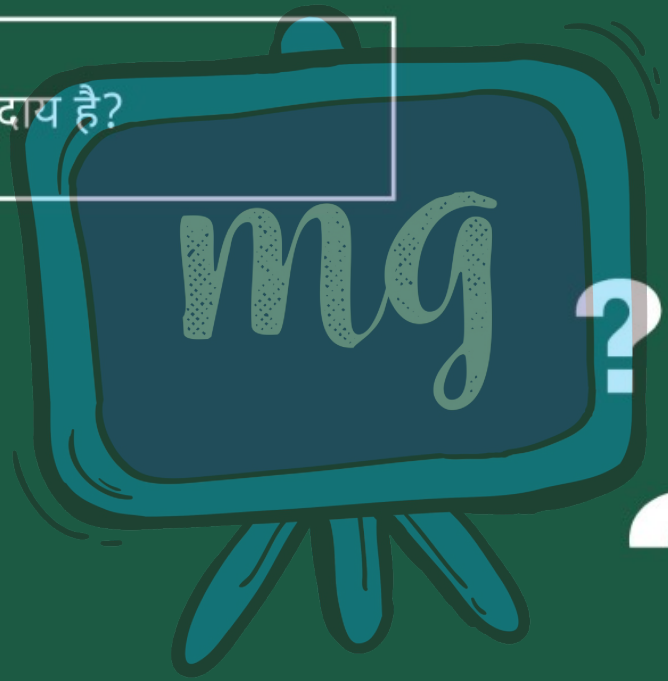
ब 1885

स 1890

द 1905



3 | अफ़्रीका में कौनसा चरवाहा समुदाय है?





अ बेदुईन्स

ब बरबेर्स

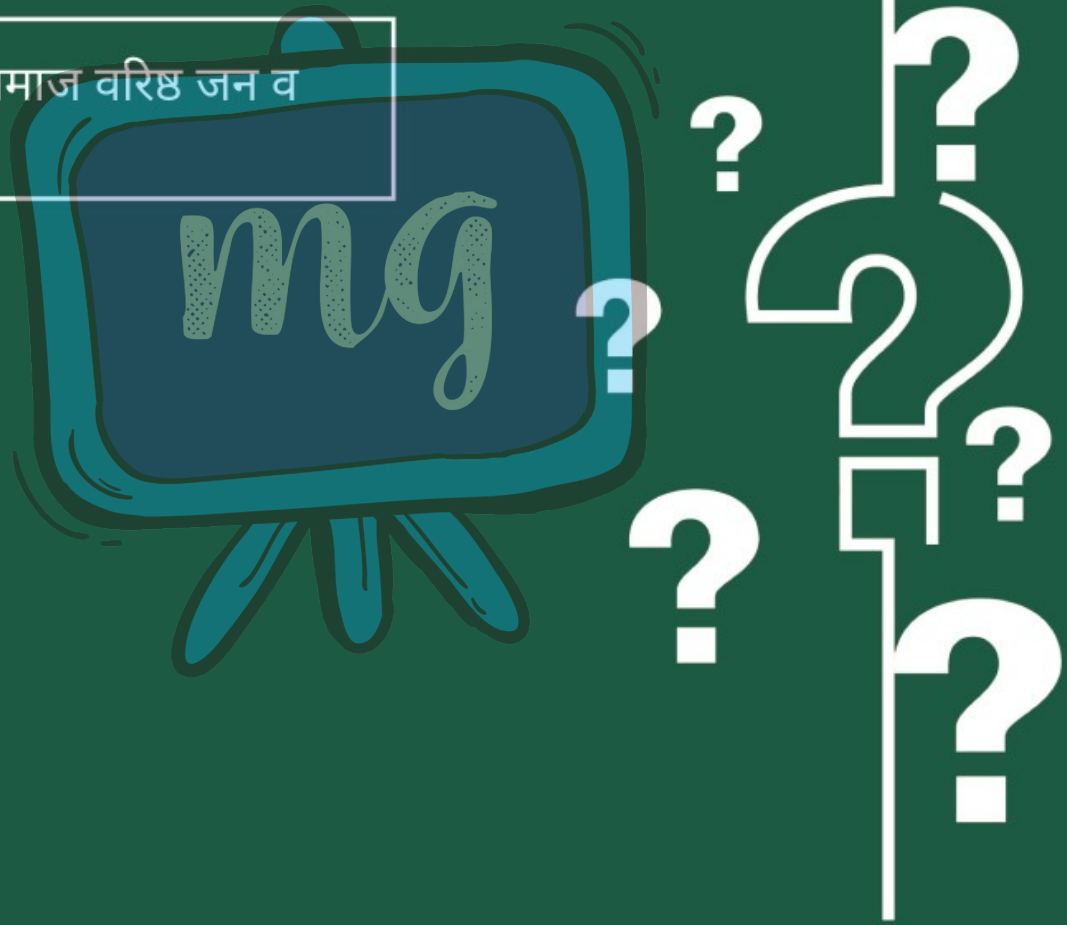
स मासाई

द ✓ सभी

4 उपनिवेश बनने से पूर्व मासाई समाज वरिष्ठ जन व योद्धा श्रेणियों में बँटा हुआ था।

अ सत्य

ब असत्य



5 उत्तरी कीनिया से तंज़ानिया के घास मैदान को ---------- नाम से जाना जाता था।

